(कहानी)

नगर सेवक

आधी रात के बाद से ही बेनीप्रसाद के तिमंजिले मकान को रहमत मजिल पर नजर रखने के लिये इस्तेमाल किया जा रहा है. हांलाकि पुलिस ने इस बात को गुप्त रखा है लेकिन बेनीप्रसाद को सुराग लग गया है कि रहमत मंजिल में आतंकवादी छिपे हुए हैं. बार-बार वह स्व्यं से पशन कर रहे हैं. ऐसा कैसे हो सकता है ? बचपन के रहमत हुसैन मेरे साथ, खेले, पले-बड़े हुए...मरने-जीने का साथ रहा....., सामाजिक कार्यो में हमेशा बढकर हिस्सा लेने वाला.... क्यो लोगों की धारणाएं सही हैं कि कौन पर....., भगवान करे यह सब गलत ही हो. लेकिन पुलिस ने जाँच परख लिया है. रहमत मंजिल के पास से तीन ऐसी कारें पाई गई हैं जो संदेह मजबूत करती हैं. दो पर डुप्लीकेट नंबर लगाए गए हैं औरएक कार से नंबर प्लेट हटा ली गई है. पुलिस को दी गई सूचना के अनुसार सात स्थानों पर भारी बमबारी की बात कहीं गई है, लेकिन यह भी गागाह किया गया है कि सुबह पांच बजे से पूर्व कोई कार्रवाही न की जाए वरना जेहादी अपनी योजना बदल देंगे और फिर हाथ नहीं आयेगे. खुफिया पुलिस, सुरक्षा-बल, एंटी-टेररिस्ट स्क्वैड सभी सतर्क हैं और हर जगह उनकी खुफिया उपस्थिति है.

निर्धारित समय पर सुरक्षा बलों ने रहमत मंजिल को घेर लिया और आतंकवादियों से आत्मसमपर्ण करने की उद्घोषणा की लेकिन कोई प्रतिक्रिया नहीं हुई. एक समय सीमा के बाद पुलिस ने रहमत मंजिल में दाखिल होने की योजना बना ली. चारों और, उपर नीचे हर तरफ ग्रिल होने के कारण अंदर प्रवेश कर पाना आसान न था, मुख्यालय को तोड़कर सुरक्षा बल ज्यों ही अंदर पहुंचे तो उनके आश्चर्य की सीमा न रही. अत्याधुनिक शस्त्रों से लेस आतंकवादी जहां-तहां ढेर हुए पड़े थे. उनके आस-पास पाउच, बेग्स आदि में सैकड़ों शक्तिशाली बम पड़े थे. शायद ये लोग निकलने की तयार में रहे होगे. कुछ लोगों में शवास कस संचार होता प्रतीत हुआ तो सभी का शीघ्रता से परीक्षण करके उनके हथियार और विस्फोटकों को वहां से हटा दिया गया और भारी बंदोबस्त के साथ अस्पलात रवाना कर दिया गया. इसमें से एक युवक को मानव बम के रूप में पाया गया, दरअसल,धातु सूचक उपकरणों से इसका पता लगाना मुश्किल कार्य था. गंधहीन, वाष्पशीलता न होने के कारण इस विशेष विस्फोटक की मशीनों द्वारा पकड़ कठिन थी. बटन, ताबिज, बेल्ट ओर जूतों में विस्फोटकों को ढाला गया था. लेकिन पता लगते ही उसके बदन से हर विस्फोटक को हटाकर नष्टर कर दिया गया और अस्पताल भेज दिया गया. रहमत मंजिल में छानबीन के दौरान भारी मात्रा में आरडीएक्स, ढेरों शस्त्र, लिक्विड़ विस्फोटक और दर्जनों मिसाइलें बरामद हुई हैं. इन्हें शायद कहीं भेजे जाने की तैयारी थी. इसी शहर में बम बनाने के स्थान और लोगों की ढेरों सूचनाएं यहां से मिली हैं. रहमत मंजिल को पूरी तरह कब्जें में ले लिया गया है और छान-बीन अभी जारी है.

हिरासत में लिए गए सभी लोगों का उपचार चल रहा है और वे सब खतरे के बाहर हैं. तलाशी के दौरान एक व्यक्ति के पास से एक महत्वपूर्ण सूचना मिली थी और वह होश में आ चुके हैं. पुलिस उनसे पूछताछ कर रही है. यह व्यक्ति और कोई नहीं, रहमत मंजिल के मालिक रहमत हुसैन हैं.

कुछ ही देर में मीडिया उमड़ पड़ा. रहमत हुसैन ने रहमत मंजिल के उस रहस्य को प्रकाशित कर दिया जिसका हमें इंतजार था, जी हां, मैंने ही पुलिस को अपने घर में आतंक वादियों के होने और उसकी साजिश की सूचना दी थी. मैं उपर वाले का शुक्रगुजार हूँ कि मैं इस नेक काम को अंजाम दे पाया. जब हम अपने जहन से दीवारों को गिरा देते हैं तो हमें हर मां अपनी लगती है. हर बखर अपना लगाता हे. यह धरती अपनी लगती है, यह वतन अपना लगता है. सेक्युलर-तर्जे-सोच ने मेरे अंदर से एक इनसान को खोज निकला जो उसकी मर्जी से हजारों अपनों को बचाने में कामयाब हुआ. इतिहास गवाह है कि अ ब तक जो सबसे ज्यादा खून बहा. उसकी वजह धर्म ही रहा है. इसकी दो वजहें हैं, कि हमने धर्म को समझा नहीं, या फिर उस इनसान को गुमराह किया और इनसानी जिंदगी को खून, आंसू, दर्द और नफरत से भर दिया. इनसान होते हुए भी हम इनसानियत से दूर रहे और इनसान इनसान के करीबआने को तड़पता रहा.

आप सोच रहे होंगे कि फिर इनसान के खिलाफ साजिश के लिए मैंने अपने घर के दरवाजे क्यों खोले. यह एक अहम सवाल है. करीब दो साल पहले मेरे इकलौते बेटे ने इंजीनियरिंग बढने की ख्वाहिश जाहिर की और वह इस शहर से दूर चला गया. एक दिन उसका खत आया कि उसने पढने के साथ एक पार्टटाइम जॉब भी कर लिया है. लिहाजा पैसे भेजने की जरूरत नहीं है. उसने लिखा कि अब मसरूफियत बढ जाएगी आप चिंता न करना. वह खुद वक्त मिलने पर फोन कर लिया करेगा. करीब एक साल बाद वह घर लौटा तो मैंने उसे अजीब जहनी कैफियत में बरामद किया. वजह मालूम की तो उसने कहा कि इंजीनियरिंग की बढाई में उसका मन नहीं लगा. वह अब अपने दोस्तों के साथ मिलकर यहीं कोई बिजनेस करना चाहता है. उसने इस काम के लिए घर के नीचे का हिस्सा दोस्तों को किराये यपर देने की जिद की तो मुझे मानना पड़ा. करीब दस रोज पहले मैंने उसे मोबाइल पर कुछ अजीब गुफ्तगू करते पाया. मेरी मौजूदगी का अहसास होते ही वह खामोश हो गया और फोन काट दिया. मैंने सख्ती से उसकी दरियाफ्त की तो उसने पूरी हकीकत बयां कर दी.

उसने खुद को खुदा के हवाले कर दिया है. उसने पूरी तफसील बयां की, उसने इंजिनियरिंग में एडमिशन तो लिया था लेकिन वह कॉलेज नहीं गया. उसकी मुलाकात वहां उल्लाह के सुपुर्द किए गए कुछ लोगों से हुई और वह पासपोर्ट बनवा के एक बुजुर्ग के साथ पाकिस्तान चला गया. वहां अल्लाह की खिदमत के लिए उसने जेहादी कैंम्पों में ट्रेनिंग ली और फिर आजाद कश्मर (पी.ओ.के.)में भी फिदायीन के कैंपों में रहा. वह जेहाद के रंग में रंगा हुआ लगा मुझे, उसमें जुनून घर कर गया. मैंने उससे बहुत से सवाल किए लेकिन मेरे हर सावाल पर सवालिया निशान लगते रहे. मुझे लगा अब वह वापस आने वाला नहीं है. मेरे जहन में बम-विस्फोटों के वे सब मंजर उभरने लगे तो हम आए दिन देख रहे हैं.. मेरे अंदर कशमकश इतनी बढी कि...मैंने तीन रोज पहले उससेउससे कहा कि मैं भी जेहाद में शामिल होना चाहता हूं तो वह बहुत खुश हुआ. उसने उन तमाम जेहादी दोस्तों से मिलवाया जिनकी तमाम प्लानिंग चल रही थी. मैं भी दिन-रात उसके साथ उसकी साजिशों में कामयाबी हासिल करने की योजनाओं में शामिल रहा. उसका हरराज मुझें पता चलता रहा, दिन मुकर्रर हो गया. जिस जूनियर कॉलेज में वह पढा था वहां सुबह प्रेयर के वक्त टाईम बमों में विस्फोट करने थे. करीब एक हजार बच्चे उस वक्त उस जह मौजूद होते हैं. न जाने कितने मासूमों की जान जानी थी, कितने पूरी जिंदगी के लिए अपंग हो जाते, सुन्न हो जाते हमेशा के लिये. ऐसी ही सात जगहों पर ऑपरेशन करने का प्रोग्राम था. एक खास ट्रेन, जो सुबह पांच चालीस पर यहां से गुजरती है, को उसे उड़ाने, होल सेल सब्जी मार्केट को गारत करने, बस अड्डें को तबाह करने, एक मंदिर में , जिसमें मेला चल रहा है, अम विस्फोट करनेक की योजना थी. एक योग शिविर में, जिसमें करीब चार हजार लोग योग ध्यान सीख रहे हैं, मेरे जिगर का टुकड़ा खुद इनसानी बम के रूप में जाने वाला था.

एक दिन पहले ही पूरी तैयारी कर ली गई थी. दूसरी सुबह साढे पांच और सात बजे की चीच ये सब जालिमाना हमले होने थे. सब जगहों से इकट्ठा होकर सुबह चार बजकर पचास मिनट पर इबादत के बाद सामूहिक रूप से कुछ खाकर हम सबको अपने-अपने मिशन पर निकलना था. मेरे बेटे को मेरे हाथ की सेवइयां बहुत पसंद थी, उसको बनाने की जिम्मेदारी मुझे सौंपी गई. मैंने अपनी पत्नी को दो दिन पहले ही उसके मायके भेज दिया था. सबने वे सेवइयां खाई. मैंने अपने हाथों से अपने बेटे को खिलाया और उसने मुझे. उस वक्त बहुत जज्वाती हो गया, उसने इनसानी बम की शक्त तो अखितयार कर ली थी लेकिन उसके अंदर इनसानी जज्बात धड़क रहे थे. वह मेरी छाती से चिपटकर लिख बड़ा कहने लगा अब्बाजान, मैं आपके हाथों से आखिरी बार सेवइयां खा रहा हूं. आज आखिरी बार हम लोग मिल रहे हैं. काश, अम्मी भी यहां होती. उसने बार-बार मेरी पेशानी को चूमा और कहा कि अब खुदा के पास ही हम मिल पाएगें. मैं भी जज्बातों को रोक न सका, आँखों के सामने अंधेरा ठा गया. उसे गोद में खिलाया, पाला, बड़े अरमानों से बड़ा किया था.

उपर वाले की मर्जी थी मैंने मारने और मरने वालों को बचा लिया. मैं पेशे से हकीमी करता हूं, दवाओं का इल्म है मुझे. मैंने सेवइयां बनाते वक्त उसमें बेहोशी की दवाओं का इजाफा कर दिया था और मुझे भरोसा था कि डेढ दो घंटे से पहले उसको खाने वाला होश में नहीं आ सकेगा और इस बीच पुलिस सबको गिरफ्तार कर लेगी क्योंकि मैंने मौका निकालकर पुलिस को फोन पर सारी जानकारी दे दी थी और हिदायत दी थभ कि वह रहमत मंजिल पर पांच बजे से पहले कोई कार्रवाही न करे. मुझे विश्वास था कि वे ऐसा ही करेंगे और वही हुआ.

अवाम के जहन में एक सवाल होगा कि मैंने यह कदम शायद इलेक्शन के लिए उठाया है. अभी कुछ दिन पहले कॉरपोरेशन के इलेक्शन के लिए मैंने नगर सेवक की उम्मीदवारी के लिये पर्चा भरा था. कल पर्चा लेने आखिरी तारीख है. मैं उम्मीदवारी का पर्चा वापस ले लूंगा ताकि मुझे लोग मौकापरस्त न समझें. न ही मुल्क के लिए मेरी वफादारी पर उंगली उठाएं. मैंने जो कुछ किया, अपने जमीर के हुक्म से किया. मुझे इसके लिए न कोई मलाल है, न जान की परवाह. बकौल आम फतेहपुरी- हमारी जान तो जानी है जिस तरह जाए. न फिर देश पर ही जान ये कुरबान हो जाए.

देश के कोने-कोने से सभी टीवी चैनलों पर फोन आने लगे. सैकड़ों हिंदू-मुस्मिलों ने रहमत हुसैन से पर्चा वापस न लेने की पेशकश की. हजारे एस.एम.एस. भेजे गये कि रहमत हुसैन ने देश और आवाम की हिफाजत के लिए दिलेरी का काम किया हैं, उन्हें ऐसे ही रहनुमाओं की जरूरत है.

दूसरे दिन उनकी इज्जत और वफादारी में उन सभी लोगों ने अपने पर्चे वापस ले लिए जो उसके खिलाफ खड़े थे. इलेक्शन कमीशन ने एक ऐसे शख्स को विजयी नगर सेवक घोषित कर दिया जिसका कोई सानी न था.

अवाम के जहन में एक सवाल होगा कि मैंने यह कदम शायद इलेक्शन के लिए उठाया है. अभी कुछ दिन पहले कॉरपोरेशन के इलेक्शन के लिए मैंने नगर सेवक की उम्मीदवारी के लिये पर्चा भरा था. कल पर्चा लेने आखिरी तारीख है. मैं उम्मीदवारी का पर्चा वापस ले लूंगा ताकि मुझे लोग मौकापरस्त न समझें. न ही मुल्क के लिए मेरी वफादारी पर उंगली उठाएं. मैंने जो कुछ किया, अपने जमीर के हुक्म से किया. मुझे इसके लिए न कोई मलाल है, न जान की परवाह. बकौल आम फतेहपुरी- हमारी जान तो जानी है जिस तरह जाए. न फिर देश पर ही जान ये कुरबान हो जाए.